SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

गीताश्री की कहानियों में मनोविज्ञान

हेमलता, Ph.D., हिंदी विभाग
कृषक इंटर कॉलेज, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
हेमलता, Ph.D.
E-mail : hema2886@rediffmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 12/07/2024
Revised on : 05/09/2024
Accepted on : 14/09/2024
Overall Similarity : 00% on 06/09/2024

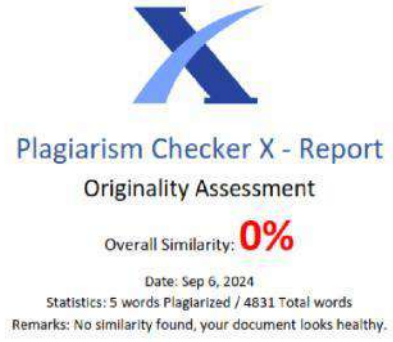

शोध सार

मानव एक बुद्धिजीवी प्राणी है। उसने अपने अस्तित्व और ज्ञान को अक्षुण्ण रखने के लिए अनेक विधाओं तथा कलाओं आदि को चुना है। प्राचीन काल में वह कुछ चिह्नों और कलाकृतियों को गुफाओं की दीवारों पर उकेर कर अपने मन के भावों को प्रस्तुत करता था। इनके साक्ष्य हमें पुस्तकों के माध्यम से देखने और पढ़ने को मिलते हैं। एक चित्रकार अपने चित्रों के द्वारा, एक शिल्पकार अपनी मूर्तियों के द्वारा और एक साहित्यकार अपने लेखन के माध्यम से अपनी मनोदशा को अभिव्यक्त करता है। मानव, समाज और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। वर्तमान समय में लेखक अपने मनोभावों को साहित्य सृजन के माध्यम से समाज के सम्मुख पेश करता है। साहित्य के जरिए वह वास्तविक और काल्पनिक जगत को पाठकों के सामने उजागर करता है। गीताश्री आधुनिक पीढ़ी की एक सशक्त और उभरती हुई लेखिका हैं। आप एक सफल वरिष्ठ पत्रकार भी हैं, आपके व्यवसाय की छाप आपके लेखन पर स्पष्ट दिखायी देती है। वे जितनी कुशलता से अपने साहित्य में शहरी परिदृश्य को उकेरती हैं, उतनी ही कुशलता से ग्रामीण परिदृश्य को भी सजीवता प्रदान करती हैं। वे अपने समय से दस साल आगे का साहित्य लिख रही हैं। उनके साहित्य में उत्तर आधुनिकतावाद का बोध होता है। उनका साहित्य मनोविज्ञान से लबरेज है। मनोविज्ञान एक शैक्षिक और अनुप्रयोगात्मक विज्ञान है। इसमें मनुष्य और पशु आदि के मानसिक व दैहिक प्रक्रियाओं, अनुभवों, व्यक्त और अव्यक्त व्यवहारों का एक क्रमिक तथा वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। मनोविज्ञान एक अनुभवजन्य विज्ञान भी है। इसका प्रमुख उद्देश्य चेतनावस्था की प्रक्रिया का सहारा लेते हुए तत्वों का विश्लेषण और पारस्परिक सम्बन्धों के स्वरूप के माध्यम से निर्धारित करने वाले विभिन्न नियमों की खोज करना है।

मुख्य शब्द

मनोविज्ञान, किशोरावस्था, अंतर्जातीय प्रेम, मनोविकार, आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी.

परिचय

गीताश्री द्वारा लिखी गयी 'ताप', 'लिट्टी चोखा', 'नजरा गईली गुईयां', 'मेकिंग ऑफ बबीता सोलंकी', 'बाबूजी का बक्सा', इत्यादि कहानियों में वृद्धों से जुड़े कई मुद्दों को प्रभावी ढंग से उकेरा गया है। ये कहानियाँ वृद्ध मनोविज्ञान के अच्छे उदाहरण हैं:

'ताप' कहानी में ऐसे दंपत्ति युगल का उल्लेख की गया जो वृद्धावस्था में हैं। इस अवस्था में दोनों के शारीरिक जरूरतों और मानसिक स्थिति में बदलाव देखने को मिलते हैं– "मैं तुम्हारे पापा को शारीरिक सुख नहीं दे सकती। मेरी देह में ना वो आग बची है ना मन में वो चाह...तुम्हारे पापा को आग चाहिए। चाह हो ना हो...चाह हो तो अति उत्तम...। मैं साठ की होने को जा रही हूँ... वे मझसे जबरदस्ती करना चाहते है। मैं थक चुकी हूँ।"[1] शालू माँ से उनके दाम्पत्य जीवन में आए कलह की वजह जानना चाहती है। वह माँ से पूछती है पर वे बताना नहीं चाहती। वह उन्हें आश्वस्त करती है कि यह बात वह उनसे सहेली के रूप में जानना चाहती है। माँ अपनी आंतरिक वेदना और कष्ट उपर्युक्त कथन के माध्यम से प्रकट करती है। पिता की शारीरिक जरूरतें बढ़ती जा रही हैं जिनके चलते वे अकसर माँ से लड़ते है। उन्हें घर से निकलने के साथ अन्य औरतों को लाने की बात करते हैं। वे उन पर शारीरिक सम्बन्ध बनाने का हर पैंतरा अपनाते हैं। अंततः माँ और बेटी आपसी सामंजस्य से निर्णय लेकर उनके लिए स्कॉर्ट की व्यवस्था करती हैं और उन्हें घर पर अकेले छोड़कर मॉल घूमने चली जाती हैं। स्कॉर्ट के साथ वृद्ध सम्बन्ध बनाने में असफल रहता है तो वह उनके मुंह पर ही उनकी बेईज्जती करके चली जाती है। 'लिट्टी चोखा' कहानी में बाबू रामवचन दीक्षित अपने सत्तरवें जन्मदिन के अवसर पर अपने सभी बच्चों और सम्बन्धियों को आमंत्रित करते हैं। वे मुजफ्फरपुर जिले के मिश्रा टोला नामक मोहल्ले में रहते हैं। उस मोहल्ले में कई ऐसे वृद्ध रह रहे हैं जिनके बच्चे विभिन्न कारणों से शहर और विदेश में बस गए हैं। दीक्षित जी की बेटी, बेटा और बहू भी शहर में रहने चले गए हैं– "अजनबी की तरह बारहवीं मंजिल पर टंगे रहने से अच्छा था, शाम होते ही मुज्जफरपुर में शाम की महफिल लगाना। उनके ठहाके में उनकी उम्र के तमाम बुजुर्गों की हिस्सेदारी होती, जिनके बच्चे बाहर बस गए थे और अपनी जिद की वजह से या किसी अन्य कारण से ये लोग यहीं छूट गए थे या छोड़ दिए गए थे। दीक्षित जी की तरह और भी जिद्दी लोग थे जो अपने अंतिम समय में अपना शहर छोड़ना नहीं चाहते थे।"[2] इस कथन की कुछ पंक्तियों में उस समय का उल्लेख है जब दीक्षित जी और उनकी पत्नी बहू–बेटे के पास शहर में रहने जाते हैं। वहाँ के छोटे–छोटे घर और एकांकी जीवन उन्हें रास नहीं आते हैं। वे मुज्जफरपुर वापसी के बारे में सोचते हैं। इस कथन में वृद्ध लोगों की विभिन्न समस्याओं को उजागर किया गया है, जैसे– अपनी जमीन के प्रीत लगाव को नहीं छोड़ पाना, संतानों का विदेश गमन या संतानों द्वारा वृद्ध जन का परित्याग इत्यादि। 'नजरा गईली गुईयां' कहानी में जानकी देवी की प्राकृतिक मृत्यु होती है। मृत्योपरांत उनके सभी बेटे उनके कमरे में रखे सामान के बंटवारे हेतु रिश्तेदारों को बुलाते है परन्तु ए.टी.एम. और जमीन के कागज़ात आदि नहीं मिलते हैं। एक दिन उनकी छोटी बेटी रिया जो शहर में रहती है; माँ को याद करते हुए उनके बिस्तर पर लेटती है। उसी बिस्तर पर रखी तकिया रूपी गुदड़ी में उसे अपने नाम लिखा जानकी देवी का एक ख़त और जमीन के कागज़ात मिलते है। उस पत्र में जानकी ने अपनी अंतिम इच्छा लिखी थी– "रिया, मेरी बाबू पता नहीं, ये चिट्ठी तुम तक किस हालत में पहुंचेगी या कब पहुंचेगी। पहुंचेगी भी या नहीं, पता नहीं। अगर तुम चिट्ठी पढ़ रही हो तो मेरी एक ख्वाहिश पूरी कर देना। करोगी ना? फाइल में जमीन के पेपर हैं, वो मुझे तुम्हारे नाना जी ने दिए थे। जिसे मैंने छिपाकर रखा है, ये जमीन तुम मेरे बाल सखा, पमपम तिवारी को दे देना। मैंने उनके नाम कर दी है। मुझे उनसे गहरा अनुराग था।"[3] जानकी देवी अपनी सबसे छोटी 36 वर्षीय अविवाहित बेटी रिया पर सबसे ज्यादा भरोसा करती थी। वे पत्र में में पमपम बाबू का जिक्र करती हैं, दोनों एक–दूसरे से प्रेम करते थे। पारंपरिक पेशा करने के कारण जानकी के पिता पमपम को पसंद नहीं करते थे। साथ ही दोनों एक अंतर्जातीय प्रेम संबंध में थे। पिता की इच्छानुसार जानकी का विवाह होता है,

परन्तु उनका पमपम के प्रति अनुराग मृत्यु के पश्चात् भी देखने को मिलता है। मृत्यु से पूर्व ही जानकी अपनी मायके की जमीन पमपम बाबू के नाम कर देती हैं। रिया द्वारा भेजे गए पत्र से उन्हें जानकी की मृत्यु का सन्देश प्राप्त होता है। वृद्धावस्था के कारण पमपम पारंपरिक गायन छोड़ चुके थे, परन्तु जानकी के लिए शोक गीत गाने जाते हैं। रिया जमीन के कागज़ात पमपम बाबू को सौंप देती है; वे दुलार के साथ उसके सिर पर हाथ फेरते हैं। हँकपड़वा गाने से पूर्व जानकी देवी के पुत्र उनका घोर अपमान करते हैं, वे जमीन के कागज़ात वहीँ पर सब के सामने फाड़ कर फ़ेंक देते हैं। वे भी अभी तक जानकी से सच्चा प्रेम करते हैं। 'मेकिंग ऑफ बबीता सोलंकी' कहानी में वृद्ध रामाज्ञा बाबू का उल्लेख किया गया है। विवाह करने की आयु में उन्होंने विवाह नहीं किया; परन्तु वृद्धावस्था में विवाहिता बबीता के प्रति आसक्त हो जाते हैं। रामाज्ञा बाबू लक्ष्मीपुरा के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उनके सान्निध्य के कारण ही बबीता को उनके साथ विभिन्न कार्यक्रमों में मंच साझा करने के मौके भी मिलते थे। उनके बारे में फैली बातों पर दोनों ही कोई प्रतिक्रिया नहीं देते थे– "बबीता के दिल में रामाज्ञा बाबू, चोरी–चोरी चुपके–चुपके... चढ़ी जवानी बुद्ढे नूं, ऐ भोला, तू लोला, तेरे ऊपर बबीता का दिल डोला, ऐ बेबी" कहू–कहू मनकेहन करइया।" कुछ को पढ़कर बबीता को हँसी आती, कुछ को पढ़कर वह उनकी क्रिएटिव राइटिंग को सराहती और गर्दन झटककर डिपार्टमेंट की सीढ़ियाँ खट–खट चढ़ जाती।"[4] दोनों ही अपने रिश्ते को छिपाने में भरोसा नहीं करते हैं। कॉलेज के छात्र उनको लेकर तरह–तरह के व्यंग्य करते हैं। बेपरवाह रामाज्ञा बाबू अपने ही जहान में खुश हैं। 'बाबू जी का बक्सा' कहानी में 75 वर्षीय सेवानिवृत्त गिरधारी बाबू का वर्णन है। वे विधुर थे। लम्बे समय से वे पत्नी विहीन जीवन जीने को विवश थे। चार बच्चों के पिता गिरधारी बाबू घर पर ही अपना मोबाइल छोड़कर और बिना कहे गायब हो जाते हैं। वे अपनी पेंशन के कुछ पैसे अपने पास रखकर ज्यादातर धनराशि अपने बेटों को दे देते हैं। उनके बच्चे उन्हें खोजते है और पुलिस में सूचना देते हैं। बाबू जी के पास एक बक्सा था। उसे खोला जाता है, उसमें कुछ चिट्ठियां, एक फोटो, कुछ किताबें और सूखे फूल आदि मिलते हैं। फोटो और चिट्ठी के जरिए उनकी सबसे छोटी बेटी उनका पाता लगा लेती है– "वो बहुत सुखी है...वो फूलपुर दियारा में हैं... नदी का द्वीप है, गंगा के बीचोबीच।... वहाँ फूल बन्नी के साथ मौज में हैं। वो पूरी तरह देखभाल करती है। उसका एक बेटा है, फूलों का कारोबार है। तुम्हारे पिता का दत्तक पुत्र... तुम्हारे तीन भाई हैं... कुछ समय रुको, फिर सबसे मिल आना।"[5] चिट्ठियों के जरिए वह रामलुभावन से मिलती है। रामलुभावन गिरधारी बाबू के मित्र हैं। ममता पिता के जीविकोपार्जन हेतु धन न होने के कारण चिंतित थी। रामलुभावन उन्हें सारी बातें बताते हुए कहते हैं कि वे फूलकुमारी के साथ बहुत खुश हैं, बाबू जी का दत्तक पुत्र उनके सारे खर्चें वहन करता है। पहले भी पिताजी ने अपनी बेटी ममता से पटना वाले घर में रहने की इच्छा जाहिर की थी, परन्तु भाईयों की कहा–सुनी के भय से वह पिताजी की बात पर ध्यान नहीं देती है। शायद शहर में रह कर पिताजी कभी कभार फूलकुमारी से मिलने जाते, परन्तु कोई रास्ता न निकलने पर वे पूरी तरह से घर छोड़ कर चले जाते हैं। वे अपने जीवन में एक सहयोगिनी का सान्निध्य चाहते हैं।

उपर्युक्त कहानियों में गीताश्री द्वारा वृद्धों की त्रासदी का वर्णन किया गया है। वे ऐसी अवस्था में होते हैं कि अपने मन मुताबिक कार्य करने के लिए कई बंदिशें झेलनी पड़ती हैं। ये विपरीत परिस्थितियां वृद्ध को कठोर कदम उठाने के लिए मजबूर कर देती हैं। इस अवस्था में वृद्धों को संतान की तरफ से अत्यधिक ध्यान और देख–रेख की जरुरत होती हैं। परिवार का सकारात्मक सहयोग न होने पर वे अलगाव, कुंठाओं, एकांकी जीवन आदि की स्थितियों से गुजरते हैं। वृद्धों का मनोविज्ञान, वृद्धों की मनोदशा समझने आदि में सहायक होता है। यह पीढ़ी बहुत अनुभवी होती है, इनके अनुभवों द्वारा जीवन का संघर्ष कुछ सरल हो जाता है।

गीताश्री ने किशोर मनोविज्ञान पर आधारित लबरी, डायरी, आकाश और चिड़िया, डाउनलोड होते हैं सपने, उजड़े दयार में, सुरताली के इन्द्रधनुषी सपने, एकांत, दुबकी आदि कहानियाँ लिखी हैं। 'लबरी' कहानी में दिखाया गया है कि बालपन के खेल–कूद का प्रेम मालाकुमारी के हृदय में युवावस्था तक भी निहित है। वह छैलाबाबू से युवती होने पर भी प्रेम करती है। उसे लगता है कि छैला अभी भी उसे प्रेम करता है, परन्तु ऐसा नहीं हैं। छैलाबाबू व्यवहारतः पूरी तरह से बदल चुका है। उसका विवाह भी हो चुका था, परन्तु उसकी पत्नी उसे छोड़कर जा चुकी है। अब वह सभी लड़कियों को प्रेम पत्र लिखकर आकर्षित करता है। बचपन में उच्च घराने की माला अपने भाई

और दोस्तों के साथ पूरे दिन गाँव में भाग–दौड़ करते रहते थे। इन्हीं में से एक छैला भी था। नीची जाति के लड़के के साथ घूमना–फिरना दादाजी को पसंद नहीं था, चेतावनी देने पर भी माला नहीं मानती तो वे उसे उसके पिता के साथ शहर में भेज देते हैं। छैलाबाबू का व्यवहार एक प्ले बॉय का हो गया है– " चिट्ठी तैयार तो छैलाबाबू भी. .. नहा–धोकर, खुशबू से तर होकर, मोटर साईकिल पर सवार निकल पड़े हवाखोरी... अपनी कथित प्रेमिकाओं को प्रेम पत्र बांटने... जो चिट्ठी पाती वह आंसुओं से रोती भावुक हो जाती... खून से लिखे ख़त को देखकर और छैलाबाबू मगन... ।"[6] छैलाबाबू का ऐसा व्यवहार मालाकुमारी के प्रेम से पूर्ण मन को आहत करता है। उसके इस कृत्य की सूचना उसे ग्राम सरपंच से मिलती है और किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा उसे वे सब पत्र भेजे गए थे जो छैलाबाबू ने अन्य लड़कियों को भेजे थे। एक बार लोगों द्वारा पकड़े जाने और मार–पीट होने पर भी वह बदलता नहीं है। डायरी, आकाश और चिड़िया कहानी की 14 वर्षीय रोली एक अत्यधिक कल्पनाशील किशोरी है। वह अपनी सारी बातें अपनी वीडा नामक डायरी में लिखती है। उसके माता–पिता अलग हो चुके हैं। उसकी कामकाजी माँ हिमानी एक अन्य पुरुष के साथ सम्बन्ध में है जो उसे पसंद नहीं है। उसके भाईयों–बहनों की जिम्मेदारी भी उसी पर आ गई है। वह डायरी में लिखती है– "आज मैं मैनहट्टन घूमी, टाइम स्क्वायर देखा। ओलेक्जेंडर मेरा अच्छा जीवन साथी हो सकता है। वह इंडियन्स की तरह नहीं है। मेरा कितना ध्यान रखा उसने। उसने खूब पेम्पर किया मुझे। हैण्डसम है ना।"[7] रोली इस कथन में अपनी मौसेरी बहन के मंगेतर ओलेक्जेंडर को अपना मंगेतर मानती है। वह कल्पना करती है कि वह अपने मंगेतर के साथ मैनहट्टन घूमती है। वह लड़का उसका खूब ख्याल रखता है। ये सारी कल्पनापूर्ण बातें वह अपनी डायरी में लिखती है। 'सुरताली के इन्द्रधनुषी सपने' कहानी में दो किशोरियों का वर्णन किया गया है। सुहानी एक साधन संपन्न अच्छे घर में पैदा हुई है। वह शहर में रहती है और छुट्टियों में अपनी दादी के घर आती है। शहर में वह कत्थक नृत्य सीख रही थी। वह अपनी कत्थक ड्रेस लेकर गाँव आती है। वह गाँव में आकर भी रोजाना कत्थक का अभ्यास करती है। दादी के घर पर सुहानी के साथ के लिए दादी सुरताली को रखती हैं। वह एक गरीब लड़की है, उसे टी.वी. देखना बहुत पसंद है। सुहानी को नृत्य करते देखकर वह भी नृत्य करना चाहती है। एक रात सुहानी की कत्थक ड्रेस पहनकर नृत्य करते हुए सुहानी उसे देख लेती है। यह देखकर वह बहुत गुस्सा होती है। घर के सभी लोग भी सुरताली पर गुस्सा होते हैं; सुहानी का ह्रदय उसके प्रति संवेदना महसूस करता है– "अगले दिन सुबह–सुबह घर में सब की नींद देर से खुली। दादी के भजन की जगह पूरे घर में घुंघरू खनक रहे थे। दादा जी सोफे पर पेपर पढ़ रहे थे। बरामदे में कत्थक की सीडी बज रही थी। सुहानी ताली बजा–बजा कर बोल रही थी और सुरताली घुंघरू बांधे नाच रही थी, बेखौफ और बेसुध।"[8] 'एकांत' कहानी में 25 वर्षीय बलात्कार पीड़िता शाल्वी का जिक्र किया गया है। वह अपने मंगेतर आशीष के साथ देर रात पार्टी करने गयी थी। आशीष उसे घर छोड़ने नहीं आता है, बल्कि उसके लिए एक कैब बुक कर देता है। शाल्वी ने उस रात ड्रिंक की थी। नशे में होने के कारण वह कैब ड्राइवर का विरोध करने में असफल रहती है। वह उसकी फिल्म बना लेता है, उसे मारने की धमकी भी देता है। सुबह वह आशीष के साथ पुलिस स्टेशन जाकर कम्पलेंट फाइल करती है। आशीष समाज में अपनी इज्जत बनाए रखने के लिए शाल्वी को पुलिस स्टेशन जाने से माना करता है, परन्तु वह अपनी बात पर अडिग रहती है। आशीष उससे रिश्ता तोड़कर अमेरिका चला जाता है। शाल्वी केस लड़ती है। उसे और उसके परिवार को सामाजिक दवाब और बातें सुननी पड़ी। शाल्वी शारीरिक, मानसिक तौर पर कमजोर होती जाती है। वह अपने कमरे में पर्चियाँ चिपकाती है:

"आई एम द बेस्ट
आई एम नॉट गिल्टी, मुझे क्यों गुनहगार समझा गया,
आई एम सॉरी मम्मा
आई विल बी बैक सून...
लिव मी अलोन...
मैं जिंदा रहना चाहती हूँ
आई एम नॉट अ बॉडी, आई एम अ सोल

मैं अपवित्र नहीं हूँ मैं जिंदा रहना चाहती थी...
आई एम द बेस्ट...आई लव माई लाइफ
तुम्हें ऐसे छोड़कर नहीं जाना चाहिए था, तुम कायर हो, मैं एक कलंक हूँ।..."[9]

शाल्वी को अपने मंगेतर, माता–पिता और समाज द्वारा उलाहने, अवहेलना और अपमान झेलना पड़ा इसलिए उसने स्वयं को एक कमरे में कैद कर लिया था। वह अपने माता–पिता का भी सामना नहीं करती थी। वह कमरे की दीवारों पर अपने लिए नकारात्मक, सकारात्मक और प्रेरणादायक बातें पर्चियों में लिखकर चिपकाती रहती थी। शारीरिक रूप से अत्यधिक दुर्बल होने पर भी वह अपने साथ हुए अन्याय के खिलाफ लड़ाई जारी रखती है।

गीताश्री ने 'प्रार्थना के बाहर', 'सोनमछरी', 'गोरिल्ला प्यार', 'एक रात जिन्दगी', 'कब ले बीती अमावस के रतिया', 'प्रश्न कुंडली', 'वह रात किधर निकल गयी' आदि कहानियाँ स्त्रियोचित मनोव्यवहार पर लिखी हैं। 'प्रार्थना के बाहर' कहानी में दो मनोवृत्तियों वाली लड़कियों को दर्शाया गया है। रचना एक चरित्रवान, सामाजिक दायित्वों और मर्यादाओं के अनुसार आचरण करने वाली और प्रार्थना स्वच्छंद संभोग तथा लक्ष्य प्राप्ति के लिए किसी भी हद तक जाने वाली थी। दोनों साथ कमरा शेयर करती थी। रचना पति द्वारा पीड़ित महिला है। ऑफिस में भी वह बॉस के व्यवहार से संतुष्ट नहीं है। 10 साल पश्चात् वह अखबार में प्रार्थना के आई.ए.एस. बनने की खबर पढ़ती है और सोचती है– "भली लड़की बनकर उसे गुलामी मिली और वह जो बुरी लड़की थी उसने अपने तरह की जिन्दगी जीने की, अपना करियर चुनने की आजादी पायी...अपना वजूद बनाया।"[10] रचना का पति उसके चरित्र पर सवाल उठाता है साथ ही उसके साथ मार–पीट भी करता है। वह एक थियेटर आर्टिस्ट थी परन्तु अपना पेशा छोड़कर अपने वैवाहिक जीवन के साथ सामंजस्य बैठाने का प्रयास कर रही थी। वह प्रार्थना के बारे में खबर पढ़कर खिन्नता महसूस करती है। 'सोन मछरी' कहानी में नवविवाहिता रूम्पा का उल्लेख है। वह अपने पति शंकर से बीड़ी बनाने का काम छुड़वाकर मछली पकड़ने का व्यवसाय शुरू करवाती है। बाढ़ के कारण शंकर नदी में गम हो जाता है। आत्म स्वाभिमानी रूम्पा नापसंद बीड़ी व्यवसाय को अपनी जीविका का साधन बनाती है। पति की लम्बी गुमशुदगी के कारण वह नीरस जीवन जी रही थी। अमितदास उससे प्रेम करने लगता है। विवाह के प्रस्ताव भी उसके सामने पेश करता है परन्तु वह मना कर देती है। मोहल्ले वालों के समझाने पर वह अमितदास से विवाह कर लेती है। शंकर की वापसी की खबर सुनकर मोहल्ले वाले सोच में थे कि रूम्पा क्या करेगी। वह किसी से कुछ नहीं कहती। अमित के साथ शंकर का घर और वह जगह ही छोड़कर चली जाती है: "नजमा आपा ने आवाज लगायी। शोनी वापस आयी...साथ में सनसनी खेज खबर भी लायी। उसे लगा सुनते ही हंगामा मच जाएगा। रूम्पा अमित का घर खाली था...सारा सामान वैसे ही पड़ा था।"[11] शंकर के आने की खबर सुनकर वह मूर्छित सी हो जाती है। अब उसे अमित के प्रेम से सरोकार था। वह शंकर से बिना मिले, अमित के साथ जीवनयापन हेतु विस्थापित हो जाती है। रूम्पा एकाग्रचित और परिस्थिति अनुसार निर्णय लेने का धैर्य रखती थी। दो पतियों की मौजूदगी में एक स्त्री का दृढ़ निर्णय लेना असंभव सा जान पड़ता है। वह मानसिक तौर पर सोच–विचार कर कार्य करती है। 'गोरिल्ला प्यार' कहानी में एक अत्यंत स्वतंत्र विचारधारा वाली लड़की का चित्रण किया गया है। अर्पिता एक कामकाजी युवती है। अर्पिता और इन्द्रजीत एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते है। अर्पिता प्रेम और सम्भोग दोनों ही चाहती है, परन्तु विवाह नहीं करना चाहती। वह खुले तौर पर इन्द्र के सामने आपने विचार रखती है। अर्पिता अपने और अन्य स्त्रियों के सम्बन्धों के बारे में सोचती है– " ...क्या हर स्त्री को वैसा ही रति–सुख मिलता होगा, जैसा उसे इन्द्र से मिला है। या फिर उसकी मात्रा अलग–अलग होती है?"[12] उसका मानना था कि दोनों के बीच ऐसे रहने से प्रेम सदैव जीवित रहेगा, इसलिए वे बस शारीरिक जरूरतें पूरी करने के लिए एक छत के नीचे मिलते थे और फिर अपने–अपने गंतव्य को चले जाते या काम में लग जाते थे। अर्पिता की सोच प्राचीन समय में प्रेम के नाम पर छली जाने वाली महिला से विपरीत थी। उसे लगता था कि सम्बन्धियों के बीच में आने पर स्त्री अपने लिए जीना छोड़ देती और घुट–घुटकर रहती है। ऐसे में पति–पत्नी, बच्चे और परिजन साथ तो रहते है, पर उनमें प्रेम नहीं रहता। 'एक रात जिन्दगी' कहानी में एक ऐसी महिला का वर्णन है जो वर्तमान में 58 वर्ष की है। वह 19 वर्ष की उम्र में एक ऐसे विवाहित व्यक्ति के साथ रिश्ते में आती है जो उसकी माँ की उम्र का था। माँ के दवाब में वह उससे विवाह करती है। पति

की मृत्यु के बाद वह 58 वर्ष की उम्र में एक विवाहित और प्रौढ़ व्यक्ति के साथ लिव इन रिलेशनशिप में आती है। वह उस व्यक्ति के साथ बहुत खुश थी। एक रिपोर्टर हर रात एक नयी लड़की या स्त्री की कहानी सुनती थी। शाहस्ता भी उसे अपनी कहानी सुनना चाहती थी, परन्तु उसकी उम्र के चलते रिपोर्टर उसके प्रति उदासीन थी। उसका मानना था कि एक प्रौढ़ महिला की क्या ही रोचक कहानी होगी। सहयोगी के कहने पर वह उसका इंटरव्यू लेती है शाहस्ता खुले ह्रदय और विचारों से अपनी अभिव्यक्ति उसके सामने रखती है। जैसे–जैसे वह उस महिला की कहानी सुनती है तो आश्चर्यचकित होती जाती है। वह बताती है– "मैं पिछले पांच साल से इनके साथ रिलेशनशिप में हूँ... हम बहुत प्यार करते हैं एक–दूसरे से। मेरे दुःख–सुख का भी ख्याल रखते हैं। अक्सर घर आते हैं। जब भी फ्री होते हैं। मैं उनकी फैमिली के बारे में ज्यादा नहीं जानती। बस उनसे मिली और फीलिंग लव वीद हिम...। ही इस वेरी रिच मैन।"[13] वह अपने बेटा और बेटी के भी बारे में बताती है– "...कैसे बेटा इस लड़की से मिला, कैसे दोनों शादी से पहले साथ रहकर एक–दूसरे को समझ रहे हैं...कैसे लड़की बिंदास है, बेटा मस्त है। ये मेरी बेटी है, ये उसका बॉयफ्रेंड है, दोनों लिव इन में हैं। शादी नहीं करेंगे, कहते हैं हम ऐसे ही अच्छे।"[14] रिपोर्टर उस महिला का खुलापन देखकर अचरज में थी कि वह अपने बेटा–बेटी के रिश्तों का खुलेपन से बखान कर रही थी। माँ, बेटा और बेटी एक–दूसरे के रिश्तों के बारे में जानते हैं और तारतम्य भी रखते हैं। वे सभी खुश थे। इस कहानी में सहयोगात्मक मनोवृति के लक्षण दिखते हैं। 'कब ले बीती अमावस के रतिया' कहानी में एक पति द्वारा परित्यक्त सीधी, सरल युवती को सशक्त और स्वाबलंबी बनते दिखाया गया है। वह स्वयं की शिक्षा भी जारी रखती है और लघु उद्योग के माध्यम से गाँव की अन्य महिलाओं को भी आत्मनिर्भर बनाती है। विवाह के समय उर्मिला देवी की जो मनोवृति थी समय के साथ उसमें अद्भुद परिवर्तन आता है। वह पति वियोग को अपने मस्तिष्क पटल से पूरी तरह से साफ कर चुकी है। 12 वर्ष पश्चात् पति मालभोग की वापसी भी उसके भावों को उद्वलित नहीं कर पाते हैं। पति उसे अपने साथ रहने के लिए विवश करना चाहता है तो वह स्पष्ट शब्दों में कहती है– "मुझे खेद है कि अब तक आपके घर में रही, पत्नी की तरह... यह कैद मेरी चुनी हुई थी, आज से आजादी भी मेरा चयन। आपका घर, आपकी पहचान, सुहाग के चिह्न जिन्हें मैंने कर्तव्य समझकर ढोया, ये सब यही छोड़कर जा रही हूँ... संभालिए. .."[15] उर्मिला इतना सख्त कदम इस लिए उठती है कि उसकी सास शशिकला और समाज के लोग उस पर दबाव बना रहे थे कि वह मालभोग के साथ रहे। वह सशक्त और निर्भीक फैसला लेते हुए सभी दिखावटी संबंधो का त्याग कर देती है। 'प्रश्न कुंडली' कहानी की शिवांगी अपने दाम्पत्य जीवन में आई बाधाओं और समस्याओं के समाधान के लिए एक टैरो कार्ड रीडर स्मिता दुर्रानी के पास आती है। वह वास्तव में अपने सम्बन्धों को सफल बनाने की मनसा लेकर उसके पास आई थी। दुर्रानी के निर्देशानुसार वह सोशल मीडिया के सभी एप्स को अन स्ट्रोल कर देती है। वह शिवांगी के भूत, भविष्य और वर्तमान से सम्बंधित काड्र्स निकलती है। उसे सहज करने के लिए दुर्रानी बताती है कि वर्तमान में वह तीसरे रिलेशनशिप में है। उसकी बातें सुनकर वह मन में कहती है– "मैं कभी अपनी जिन्दगी को एक्सपेरिमेंटल नहीं बनाऊँगी। मैं इतनी मजबूत हूँ कि अकेली राह चुन सकती हूँ। उन बूढ़ी आँखों को भरोसे में लेकर... उनकी रौशनी में ... मुझे तीन पुरुषों की जरूरत नहीं स्मिता... तुम तो अभी भी घर, पति जैसे भ्रामक शब्दों में उलझी हो... तुम बिना पुरुष के रह सकती थी... क्यों तुम ने इतने प्रयोग किए... क्या पुरुष के बिना तुम्हारी जिन्दगी नहीं चलती... अहा...।"[16] अंततः वह मन ही मन निश्चय करती है कि वह ऐसी महिला की सलाह नहीं लेगी जो स्वयं के रिश्तों में स्थायी भावों की पक्षधर नहीं है। वह अपने जीवन में आयी बाधाओं को सुलझाने का दृढ़ मन बना चुकी थी। 'वह रात किधर निकल गयी' कहानी की बिन्दू अपने किशोर बेटे वैभव के व्यवहार से मानसिक रूप से अत्यधिक आहत होती है। वह एकांत स्टडी के नाम पर ब्लू फिल्म्स लैपटॉप पर देखते हुए बिन्दू द्वारा पकड़ा जाता है। वह उसे बहुत मारती है और अपने पति केशव को भी इस बारे में बताती है। पति उसके इस व्यवहार को नेचुरल कहकर टाल देता है। केशव की बात सुनकर वह और भी स्वयं को ठगा सा महसूस करती है। पिता की नजर अंदाजी वैभव के व्यवहार में परिवर्तन ना आने का कारण बनती है। वह मन ही मन सोचते हुए अतीत की स्मृतियों में खो जाती है– "ये इच्छाएँ अपना–पराया भी नहीं देखती हैं... या गलत–सही का बोध इस बच्चे में नहीं डेवलप नहीं कर पाया है... क्या है... ये...?"[17] एक रात वैभव अपनी बहन आयशा की देह पर हाथ फेर रहा था। बिन्दू उसे ऐसा करते हुए देखती हूँ। वह स्वयं के संस्कारों पर भी संदेह करने की मनोस्थिति में पहुँच चुकी थी।

गीताश्री की कहानियों की भाषा शैली बहुत ही सारगर्भित और प्रभावित करने वाली है। यह उनकी भाषा शैली का ही प्रभाव है कि पाठक उनकी कहानियों से पल भर के लिए भी तारतम्यता नहीं छुड़ा पाता है। वे निम्न कथनों के माध्यम से उत्कृष्ट उदाहरण पेश करती हैं– "अब स्मृतियाँ भी गायब हो गई थी...सामने नन्हीं आयशा और नन्हीं बिन्दू का चेहरा गड्ड मड्ड हो रहा है। दोनों अधूरे चेहरे, रह–रह कर आधे–अधूरे पर रोशनी और अंधेरे चमक रहे हैं। हवा का दवाब बढ़ गया है। फप्पोले फटना चाहते हैं, मृत नीली धारियां जीवित हो उठी हैं। सामने गहन अंधेरे में लम्बी–अंतहीन सुरंग नजर आ रही है... उसकी काया को इसमें गुम हो जाना है।"[18] इन पंक्तियों में लेखिका ने भूत और वर्तमान का सुन्दर ताल मेल प्रस्तुत किया है। यहाँ पूर्वदीप्ति, आत्मकथात्मक, मनोविश्लेषात्मक और वर्णनात्मक शैलियों का उत्कृष्ट उदाहरण पेश किए हैं। यह कथन भाषा की सुदृढ़ता का द्योतक है। 'लकीरें' कहानी से लिया गया कथन निम्न प्रकार है– "माँ कहती थी, "औरत और नदी, दोनों दुख–विपत्ति पर सूख जाते हैं। दोनों का पानी सूख जाता है और बस लकीर बच जाती है।"[19] इस कथन में नदी को औरत के प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। अगला कथन 'गोरिल्ला प्यार' कहानी से प्रस्तुत है– "आकाश...उड़ान का शौक़ीन। उसका प्रोफाइल खोला। शानदार तस्वीरें। लाइट के साथ, पायलट की ड्रेस में। स्विमिंग पूल में नहाते हुए। स्टेटस सिंगल और इंटरेस्टेड इन वीमैन वनलि। अर्पिता को पूरा प्रोफाइल भा गया। हाँ... ये बंदा ठीक रहेगा..."[20] यहाँ लेखिका ने भाषाई विविधता को पेश किया है।

हिंदी	: खोला, नहाते।
अंग्रेज़ी शब्द	: लाइट, पायलट, ड्रेस, प्रोफाइल, स्विमिंग पूल।
अंग्रेज़ी वाक्य	: स्टेटस सिंगल और इंटरेस्टेड इन वीमैन वनलि।
उर्दू,फारसी और अरबी शब्द	: शौक़ीन, शानदार, तस्वीरें, बंदा।

निष्कर्ष

गीताश्री की कहानियाँ विभिन्न मनोविज्ञान से ओत–प्रोत हैं। वे मानव के मन में निहित बातों को प्रभावी ढंग से पेश करने में सफल रही हैं। किशोर मनोविज्ञान का सबसे सशक्त उदाहरण 'डायरी, आकाश और चिड़िया' कहानी में देखने को मिलता है। स्त्री मनोविज्ञान का सर्वोत्तम और सशक्त उदाहरण 'कब ले बीती अमावस के रतिया' कहानी में देखने को मिलता है। वृद्धों पर आधारित लगभग सभी कहानियाँ मनोविज्ञान के सुन्दर उदाहरण पेश करती हैं। उनकी कहानियों की भाषा अत्यधिक सुदृढ़ और सशक्त है। गीता जी की पत्रकारिता का प्रभाव उनके लेखन पर स्पष्ट उजागर होता है।

सन्दर्भ सूची

1. गीताश्री, (2013) *ताप, प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 89।
2. गीताश्री, (2020) *लिट्टी चोखा, लिट्टी चोखा एवं अन्य कहानियाँ,* राजपाल एंड संज, दिल्ली, पृ. 08।
3. गीताश्री, (2020) *नजरा गईली गुइयां, लिट्टी चोखा एवं अन्य कहानियाँ,* राजपाल एंड संज, दिल्ली, पृ. 26।
4. गीताश्री, (2015) *मेकिंग ऑफ बबीता सोलंकी, स्वप्न, साजिश और स्त्री,* सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 66।
5. गीताश्री, (2021) *बाबूजी का बक्सा, बलम कलकत्ता,* प्रलेक प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, महाराष्ट्र, पृ. 69।
6. गीताश्री, (2013) *लबरी, प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ,* गीताश्री, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 147।
7. गीताश्री, (2015) *डायरी, आकाश और चिड़िया, स्वप्न, साजिश और स्त्री,* सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 10।
8. गीताश्री, (2015) *सुरताली के इन्द्रधनुषी सपने, स्वप्न, साजिश और स्त्री,* सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 134।
9. गीताश्री, (2018) *एकांत, लेडीज सर्कल,* राजकमल एंड संस, दिल्ली, पृ. 107– 108।
10. गीताश्री, (2013) *प्रार्थना के बाहर, प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 29–30।

11. गीताश्री, (2013) *सोन मछरी, प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 42।
12. गीताश्री, (2013) *गोरिल्ला प्यार, प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 55।
13. गीताश्री, (2013) *एक रात जिन्दगी, प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 62।
14. गीताश्री, (2013) *एक रात जिन्दगी, प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 61।
15. गीताश्री, (2020) *कब ले बीती अमावस की रतिया, लिट्टी चोखा एवं अन्य कहानियाँ,* राजपाल एंड संस, दिल्ली, पृ. 88।
16. गीताश्री, (2017) *प्रश्न कुंडली, डाउनलोड होते हैं सपने,* सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 63।
17. गीताश्री, (2017) *वह रात किधर निकल गयी, डाउनलोड होते हैं सपने, डाउनलोड होते हैं सपने,* सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 141।
18. गीताश्री, (2017) *वह रात किधर निकल गयी, डाउनलोड होते हैं सपने, डाउनलोड होते हैं सपने,* सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 141।
19. गीताश्री, (2015) *लकीरें, स्वप्न, साजिश और स्त्री,* सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 86।
20. गीताश्री, (2013) *गोरिल्ला प्यार, प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 57।

****